दिनांक: 15.8.60

बहनो और भाईयो, हमवतनों,

कल आपने जन्माष्टमी मनाई थी । आज हम आजाद हिन्दुस्तान का जन्मदिन मनाने जमा हुए हैं । याद है आपको जब 13 बरस हुए इस मुकाम से यह हमारा प्यारा झण्डा पहले बार लाल किले पर फहराया था । और उसने दुनियां को घोषणा की थी कि एक नया मुल्क पैदा हुआ, लेकिन असल में वह इतना खुशी का दिन नहीं था जितना पुरानी यादों का दिन कि जो हमने प्रतिज्ञाएं ली थी, इकरार किये थे, वह कुछ पूरे हुए थे, लेकिन पूरे होते होते नयी मुसीबतें, नये सफर आगे नहर आये थे । और इसलिए यह जरूरी हुआ कि हम फिर से अपने दिल को कड़ा करें, अपने जिस्म को सीधा करें, अपनेसिर को ऊंचा करें और कदम बढ़ायें । एक मंजिल पूरी हुई, लेकिन सफर खत्म नहीं हुआ । दूसरी मंजिल फौरन सामने आयी, और इस तरह से हम आगे बढ़े, ऊंच-नीचं, कभी कभी ठोकर खा कर गिरे, लेकिन जब जब हमने अपने पुराने सिद्धान्तों को, पुरानी बातों की याद की, अपने पुराने बड़े नेता गांधी जी की याद की, फिर हम में ताकत आयी । तो आज हम यहां जमा हुए है कोई तमाशे की तौर पर नहीं, तमाशा देखने या दिखाने, लेकिन पुरानी याद करने और आगे देखने । इसलिए कि फिर से हम पुरानी प्रतिज्ञायें अपने सामने रखें ।

हमें आजादी मिली, परिश्रम से, कुरबानी से, मेहनत से सब बातों से, लेकिन अगर आप समझें कि आजादी मिल के काम कौम का खत्म हो जाता है, तो वह गलत विचार है । आजादी की लड़ाई हमेशा जारी रहती है, कभी उसका अन्त नहीं होता, हमेशा उस के लिए परिश्रम करना हमेशा उस के लिए कुरबानी करना, तब वह कायम रहती है, । यहां कोई मुल्क या कौम ढीला पड़ जाता है, कमजोर हो जाता है, असली बातें भूल के छोटे झगड़ों में पड़ जाता है, उसी वक्त उसकी आजादी फिसलने लगती है । इसलिए आज का दिन जैसे मैंने आपसे कहा, कोई एक तमाशे का दिन नहीं है । यह एक फिर से इकरार लेने का दिन है, फिर से प्रतिज्ञा करने का, फिर से जरा अपने दिल में देखने का कि हमने अपना कर्तव्य पूरा किया कि नहीं ? पहला कर्तव्य, पहला फर्ज किसी मुल्क के लिए, किसी कौम के लिए, क्या होता है ? पहला फर्ज है अपनी आजादी को मजबूत करना और कायम रखना । क्योंकि इसके अलावा, अगर इस को आप दूसरा दर्जा दें तो और चीजें मिट जाती है । इसलिए हर बात को इसी गज़ से नापना होता है । यह चीज़ हमारे मुल्क की आजादी को कायम रखती है हमारे मुल्क की एकता को कायम रखती है और हमारे मुल्क की तरक्की करती है कि नहीं । अगर हम में से कोई इस बात को भूल जायें और और बातों को सामने रखें, अगर हम में से कोई अपने सूबे को सामने रखें, अपने प्रान्त और प्रदेश को, मुल्क को भूल कर, अगर हम कभी इस सम्प्रदाय में या दूसरे सम्प्रदाय में जायें, अगर हम अपनी जाति को और कास्ट को आगे रखे मुल्क के, अगर हम अपनी भाषा को आगे रखें, मुल्क के तो हम तबाह हो जायेंगे और मुल्क तबाह होगा । यह सब बातें अच्छी है अपनी जगह पे, सब बातें अच्छी हैं ।

हमारा शहर है, हमारा सूबा है, मौहल्ला है, मुबारक हो हमको । हमारा खानदान है, परिवार है, प्रेम है हमें उससे, लेकिन जहाँ हमने अपने परिवार को मुल्क के ऊपर रखा, जहाँ हमने शहर को प्रदेश को, भाषा को, सम्प्रदाय को किसी चीज़ को हमने अपने देश के ऊपर रखा, तो देश फिर से गिरने लगेगा और यकीनन गिरेगा । मैं आपको याद दिलाता हूँ इसलिए इस बात को कि याद दिलाने का मौक़ा आया, वक्त आया, क्योंकि हम भूल जाते हैं इन बातों को, भूल जाते हैं कि किस तरह से चालीस-पचास बरस की मेहनत, परिश्रम, बलिदान, कुरबानी, से हमने अपने देश को ढाला, हमने, मैंने तो नहीं, हमारी कौम ने, गांधी जी के नीचे देश को ढाला और ढालकर उसे मज़बूत बनाया, उसको एक बड़ा हथियार बनाया, शांतिमय हथियार, जिससे हम स्वराज लें । स्वराज लेना क्या काम था, स्वराज तो मिल ही जाता, जिस वक्त हमारे मुल्क की एकता हुई, एक मुल्क में परिश्रम करने की ताकत आयी, क्योंकि याद रखो कि कोई बाहर का दुश्मन नहीं है जो हमारा नुकसान ज्यादा कर सकता है, अगर हमारा दिल ठीक है, हमारा दिमाग ठीक है, हम मिलकर काम करते हैं और निडर रहते हैं । डर बाहर से कभी नहीं इस मुल्क को हुआ, डर अन्दर से हुआ, अन्दर की कमजोरी से, अन्दर की फूट से, अन्दर की छोटी बातों से, अलग अलग हम टुकड़े हो जायें, यह चीज़ मुल्क को कमजोर करती है । इस चीज़ ने मुल्क को पिछले जमाने में, सैकड़ों बरसों से कमजोर किया और बाहर के लोगों ने आकर फतेह कर लिया, अपनी ताकत से नहीं, हमारी कमजोरी से, हमारी जहालत से वो आये यहाँ । तो फिर कहीं कहीं फिर से नजर आता है, यह जहालत और यह कमजोरी, और कभी जबान के नाम से

भाषा के नाम से लोग बड़े मैदान में लड़ने को आने की कोशिश करते हैं, कभी कुछ भूल के कि असल चीज़ जिसके सामने उन्हें सिर झुकाना है वह अपना मुल्क है और मुल्क की एकता है। और जो उसको भूल जाता है और जो मुल्क को भूल जाता है वह मुल्क को नुकसान पहुचाता है, चाहे कितनी लम्बी लम्बी बातें कोई कहे। याद रखने की बात है, अच्छी तरह से इसको, और सहज़ याद रखने की बात नहीं है, बल्कि मैं आपसे कहता हूँ वक्त आया है कि हरेक हिन्दुस्तानी को अपने दिल को टटोल कर देखना है कहाँ है वो अपने मुल्क के तरफ है या किसी गिरोह के तरफ है यह जवाब आपको एक एक आदमी को देना है और एक एक औरत को, और एक एक बच्चे को। वक्त आ गया है कि इस मामले में कोई ढील नहीं हो, इसमें कोई धोखा नहीं हो, इसमें कोई फरेब न हो। जिस तरह से हम अलग अलग, लड़े, देखते नहीं कि हमारी सरहद पर क्या होता है, देखते नहीं कि हमारी इस वक्त आजकल की दुनियां में क्या हो रहा है उलट-पलट, क्या नये नये हथियार हैं। क्या बड़े बड़े जंगी पहलवान दुनियां में लड़ाई की तैयारी करते हैं और मालूम नहीं कब आग लग जाये। इस सब बातों को भूलकर, अपने मुल्क की एकता को भूलकर हम पड़े इन बातों में, तो फिर आईन्दा जो इतिहास के लिखने वाले होगें, क्या लिखेगे इस जमाने को। लिखेगे कि हां हिन्दुस्तान के लोगों ने एक बड़ा लीडर उनके पास आया, बड़ा नेता गांधी और उसने हिन्दुस्तान के लोगों को जो गिरे हुये थे, गुलाम थे उन को सिखाया मिलकर काम करना, उनको सिखाया जो उनके बीच में दीवारें है उनको तोड़ देना। जो बिचारे नीचे थे गिरे हुए थे

हरिजन भाई थे उनको ऊंचा किया, क्योंकि उस के सामने यह मकसद था कि हिन्दुस्तान के सब लोग चाहे उनका जो धर्म हो, मजहब हो, चाहे जो जाति हो, वो सब बराबर से फायदा उठायें, आजादी हो। आजादी आयी, आजादी आयी इण्डेपेन्डेंस आयी, किस के लिए आजादी आई किस के लिए इण्डेपेन्डेंस क्या चन्द लोगों के लिए आयी, क्या जवाहर लाल के लिए आयी कि उसको अपने चन्द रोज के लिए प्रधानमंत्री बना दिया, जवाहर लाल आयेंगे और जायेंगे और लोग भी आते हैं और जाति हैं लेकिन हिन्दुस्तान तो आया ही है, जाता नहीं है और रहेगा। तो फिर सब के लिए जो हिन्दुस्तान के चालीस करोड़ आदमी हैं और औरतें है और बच्चे हैं जो हिस्सेदार हैं, वारिस है इस आजादी के, उनको पूरा इससे फायदा मिलता है तब आजादी पूरी हो। इसी के लिए हमने कोशिश की, हम कोशिश करते हैं। इसी के लिए पंचवर्षीय योजना और क्या क्या बातें आती हैं, कि सारे हिन्दुस्तान के चालीस करोड़ आदमी और औरत, हिस्सेदार हों, आजादी में हिन्दुस्तान की, बराबर के हिस्सेदार हों, इसीलिए हम कहते हैं कि हमारा मकसद हमारा ध्येय समाजवाद है, जिसमें बराबरी हो सभों की। मुश्किल सवाल हैं, एकदम से नहीं हो सकता क्योंकि हजार उसमें खाई-खंदक है, दिक्कतें है, परेशानियां हैं। क्योंकि एकदम से आप एक आदमी को बदल नहीं सकते, एकदम से आप चालीस करोड़ आदमियों को नहीं बदल सकते, न मुल्क को बदल

→

सकते हैं । लेकिन हर वक्त अगर दिमाग में यह तस्वीर रखें, किधर हम जा रहे हैं कि एक समाज बनेंगी, समाजवादी उसूलों पे, सभों को बराबर का अधिकार उसमें मिले, चाहे वो गांव में रहें या शहर में रहे, सभों को बराबर की तरक्की का मौका मिले, और उसके लिए हम काम करें और मुल्क की दौलत अपने परिश्रम से, मेहनत से बढ़ायें और उसको देखें कि ठीक बंटती है, खाली कुछ जेबों में अटक नहीं जाती, तो यकीनन वहां हम इस मंजिल पर भी पहुंचेंगे, जमाना लगता है । यह कोई जादू नहीं है कि माला जप के हासिल नहीं कर लेना है । परिश्रम से, पसीने बहाकर, कभी कभी खून बहा कर भी यह बातें हासिल होती है । तो फिर वो जो इतिहास करने वाला लिखें कि हां एकदम से हिन्दुस्तान के लोग उपर से लेकर हिमालय कन्या-कुमारी तक जागे और उठे, सिर उंचा हुआ जो पीठ पर उनके बोझे थे बहुत कुछ उन्होंने फेंके । अपने बड़े नेता गांधी जी से सबक सीखकर आगे बढ़कर उन्होंने हिन्दुस्तान को आजाद किया । सैकड़ों बरस बाद हिन्दुस्तान फिर से चमका, फिर से उसकी आवाज़ उठी और दुनियां ने उस आवाज़ को सुना और उस पे असर हुआ क्योंकि वह हिन्दुस्तान की भारत की असली आवाज़ थी, कोई नकली नारे नहीं थे, इधर उधर से लिये हुए । सुना उसको और उसकी कदर हुई और फिर क्या, उसी हिन्दुस्तान के उन्हीं लोगों ने जिन्होंने हिम्मत दिखायी थी, एक ख्वाब में पड़ गये, स्वपन में, गफ्लत में पड़ कर. आपस में लड़ाई लड़ने लगे कहीं किसी नाम से, कहीं मजहब का नाम, कहीं धर्म का, कहीं जाति का, कहीं जबान का नाम, कहीं सूबे का । इन सब बातों में पड़ कर आपस में लड़ रहे है और दुनियां ने सोचा कि क्या तमाशा है, क्या हमें धोखा हो गया था इनका अन्दाजा करने में, जरा आप सोचें और आज के दिन

→

खासतौर से, क्योंकि आज का दिन जैसे मैंने आपसे कहा तमाशे का नहीं है, याद करने का है, ध्यान देने का है, दिल में देखने का है, और प्रतिज्ञा करने का है । इसलिए अगर आज के दिन कुछ लोग कहें कि हम आज के दिन को नहीं मनाते इसलिए कि हमें रंज है किसी बात का, उनको रंज है, सही रंज हो सकता है । मैं उसमें नहीं कहता, लेकिन उससे जाहिर हुआ कि वह छोटी बातों में पड़े है, और भूल गये कि आज के दिन की अहमियत क्या है ? और भूल गये कि हिन्दुस्तान क्या है और भारत माता क्या है और हर दुनियां की चीज़ उससे कम है हमारी आँखों में चाहे कोई चीज़ हो, चाहे सूबा हो, चाहे भाषा हो, चाहे रंज हो, चाहेखुशी हो, इस तरह से हमें इन बातों को देखना है । आपने देखा कि एक हादसा हुआ तकलीफदेह, परेशान करने का हादसा । आसाम, हमारे प्रदेश में हुआ और आसाम और बंगाल के हमारे बड़े बड़े प्रदेश इसमें फंस गये, रंज में, दिक्कत में, मुसीबत हैं । उसको हमें दूर करना है और करेंगे हम उसे दूर, कोई शक नहीं लेकिन लोग उसमें पड़ के एक दूसरे से रंजिश में आ कर, दूसरे डर में आकर बात को समझलने नहीं देते, वो जमती नहीं बात । एक दूसरे की बुराई करते रहते हैं । (याद रखिए कि दुनियां में बहुत सारी खराबियां होती है, लेकिन एक ऐब एक खराबी, एक गुनाह, एक पाप एक कमजोरी जो कुछ उसे कहिए सब में बड़ी जो है वो डर है । डर से ज्यादा बुरी चीज़ कोई नहीं है । क्योंकि जितनी खराबियां दुनियां में है, सब डर की औलाद है । एक दफे एक कौम में या इंसान में डर आ जायेगा तो फिर और सब खराबियां उसमें आ जायेंगी । वह झूठा होगा, मक्कारी करेगा हर किस्म की बात करेगा । उसका सिर नीचा होगा, उठ नहीं सकता,)

और अगर हिन्दुस्तान में ताकत आयी थी तो उस आदमी ने गांधी ने ताकत दी थी कि हमारे दिलों से डर निकाला । बड़े बड़े साम्राज्यों का डर निकाला और हम में एकता सिखायी । तो यह क्या बात है कि लोग एक दूसरे से डरें आसाम में या बंगाल में हमेशा के रहने वाले, क्या बात है ? कि उस ख्याल में विचार में पड़ कर परेशान होकर वो भूल जायें कि आसाम और बंगाल से एक चीज़ ज्यादा है बड़ी है और वो भारत है और हिन्दुस्तान है और जो लोग भारत को भूलते हैं वे न बंगाल की सेवा करते हैं न आसाम की सेवा करते हैं । ~~जो लोग आज के दिन भी~~ (और हम में से कोई इस बात को भूल जायें कि उनका पहला धर्म और कर्तव्य क्या है, उन्होंने अपने मुल्क के साथ वफादारी नहीं की, धोखे से, गलती से, यह बात समझनी है और आज के दिन हमें और आपको सब को समझनी है और इस बात का पक्का इरादा करना है कि हम ऐसी कमजोरियों को हटायेंगे अपने मुल्क से । जरा इधर देखें आप दिल्ली के पास पंजाब है । अजीब तमाशा है कुछ दिनों से वहां मचा हुआ है भाषा के लिए और सूबे के नाम से यह और वो । वो बातें अच्छी है । या बुरी, यह मौका नहीं है मेरे कहने का । लेकिन यम मैं जानता हूं कि जो बातें पंजाब में हुई है और जिस ढंग से कार्यवाही हो रही है वो बुरी है और गलत है और हिन्दुस्तान की आजादी के खिलाफ है । पंजाबी जवान एक शानदार जबान हैं, एक सुवारह जबान है एक ताकतवर जबान हैं, और मैं समझता हूं कि हर पंजाबी का हक है और फर्ज है उसको सीखने का और सीखें । क्योंकि नहीं सीखता तो वह एक अपनी दौलत को छोड़ देता है । हिन्दुस्तान का एक धन औरदौलत है वो चीज, मेरी समझ

नहीं आता कैसे वहसे छिड़ती है कि हिन्दी और पंजाबी या बंगाली और आसामी सब हमारी थैली के सोना है, जेवरात हैं, संस्कृति है, हिन्दुस्तान की, खाली एक छोटे दिमाग, अनपढ़ दिमाग नालायक दिमाग एक जवान को दूसरेजवान के मुकाबले में खड़ा करते है । जो लायक है वह दूसरे से सीखते हैं, दूसरे का मुकाबला नहीं करते है । किस ढंग में हम पड़े ? किन गलतियों में हम आ गये हैं ? किस छोटे पन में हम आ गये है ? एक बड़ा देश है हमारा, वही कौम है, बड़ा इतिहास है, हजारों बरस हमारी याद में है, हमारी कौम के, उसमें अच्छी बातें, बुरी बातें । फिर से एक नया जमाना शुरू हुआ, नया युग शुरू हुआ, फिर से कुछ दिमाग हमारे ताजे हुए, हाथ पैर तगड़े हुए और हम आगे बढ़े । फिर आए लोग वही पुराने झगड़े हमारे दिमाग में डालने, हमारे हाथ पैर जकड़ने लगे, इन बातों से, कोई कहे कि जाति का, कष्ट का नाम ले के । कोई भाषा का नाम ले कर भाषा की खराबी करें, क्योंकि भाषा एक चीज़ है ऊंचा करने को, मजहब एक चीज़ है ऊंचा करने को, लड़ाई लड़ने के लिए नहीं । और हिन्दुस्तान का कौन एक सूबा हो बड़ा और कौन छोटा, इस पर लोग लड़ाई लड़े । और उसमें हिन्दुस्तान के एक शरीर को घायल करें । इस तरह से कोई मुल्क की सेवा करता है ? तो इन बातों को आप गौर करें । हमें आजाद हुए हमारी कोई ख्वाहिश नहीं कि हम किसी दूसरे मुल्क पर, किसी दूसरी ज़मीन पर हमला करें, वो जमाना गुजरा । लेकिन हां उसी के साथ यह भी बात कि हमारी जमीन पर, हमारे लिए एक हमारे घर में हम किसी दुश्मन को नहीं आने देंगे । दोनों बातें साथ चलती हैं अपनी कदर और दूसरे की भी कदर । लेकिन दूसरा जो हमारी

शान के खिलाफ बात करे उसका मुकाबला हर तरह से । अगर हमारी सरहद पर कोई खतरा हो तो उसका मुकाबला । लेकिन हम बालिस्त भर भी किसी की ज़मीन नहीं चाहते, किसर और के हक पर दखल नहीं दिया चाहते । क्योंकि हमारा उसूल है कि सारी दुनियां में लोग अपने अपने मुल्क में, अपनी अपनी जगह आजाद रहें । हमारा उसूल है एक बड़ी आजादी को छोड़िए, आप जानते हैं कि एक एक गांव में पंचायती राज्य शुरू किया, कि गांव वाले भी आजादी के हिस्सेदार हों और खुद अपना प्रबन्ध और इंतजाम करें । एक कसर रह गयी हमारे इस सिलसिले में एक कमी रह गयी है हिन्दुस्तान की आबादी में और लोग शायद समझते हों कि हमें वो याद नहीं रहती । लेकिन वो हमेशा याद रहती है और वह कभी पूरी होगी, वो कमी है छोटा सा हिस्सा हिन्दुस्तान का, जिसका नाम गोवा है । याद रखिए और दुनियां याद रखे इसको कि हर वक्त हमारे दिमाग में है और दिल में है और यह महज़ हमारी हिम्मत है कि हमने हाथ उठाना रोका है, कमजोरी नहीं है, यह शान है और हिम्मत है क्योंकि हम अपने उसूलों पर चिपके कि हम फौजी जरिये से इस बात को हल नहीं करेंगे । लेकिन यकीनन हिन्दुस्तान के याद में रहेगा और वो हल करेगा सवाल । तो मैं चाहता हूं इसकी दुनियां याद कर लें और जो मुल्क गोवा को दबाये है वो भी इसको समझ लें और याद कर लें, और किसी धोखे में न पड़ें ।

ज़रा आप आजकल की दुनियां को देखें किस ढंग की दुनियां है, कैसे फिर से फायदा हो रहा था, हम समझते थे, हवा अच्छी हो रही थी,

फिर बिगड़ी और एक दूसरे के दिल में, विष और जहर फैलाने लगा, बड़े मुल्कों के, फिर एक दूसरे को बन्दूक और तलवार दिखाने लगे और बन्दूक तलवार के अलावा जो बड़े बड़े हथियार है । ऐसी दुनिया है खतरनाक दुनिया है, भयानक दुनिया है और जो लोग जरा भी गफलत में पड़ते हैं वो गिर जाते हैं, यह बातें हमें याद करनी है आज के दिन और खासकर आज के दिन याद करना है हमें उस शख्स को, जिसने सब से ज्यादा हिन्दुस्तान की ताकत बढ़ायी हिन्दुस्तान की एकता और हिन्दुस्तान को आजाद किया, गांधी जी का नाम हमें याद रखना है, नाम याद रखने से क्या होता है, उनका, काम, उनके सिद्धान्त उनके उसूल याद करने हैं और इस तरह से हमें अपने मुल्क को बढ़ाना है । क्योंकि हमारा मुल्क कोई छोटा मोटा मुल्क नहीं है, चाहे इधर उधर चला जाये, हमारे मुल्क की किस्मत में दो ही बातें लिखी है एक शान से दुनियां में सिर उठाकर आगे बढ़ना, एक गिर जाना, अगर हम कमजोर है, बीच की हैसियत हमारी नहीं रह सकती । जाहिर है कि हम अपने मुल्क को गिरने तो नहीं देंगे, वो जमाना गया जब यह मुल्क गिर जाये, या हमारी कौमें इसको बर्दाश्त करें । इसलिए दूसरा ही रास्ता हमारे लिए है और वो यह है, कि सिर उठा कर मजबूती से कदम मिला के हाथ मिला के हम आगे बढ़े, एकता से और कोई चारा नहीं है और जो रास्ते में आये इसके, उसको हम हटायें रास्ते से, क्योंकि बर्दाश्त नहीं रही है कि छोटी मोटी बातों में हम हिन्दुस्तान की किस्मत को बेच दें और खराब कर दें ।

को बेच दें और खराब कर दें । लेकिन यह मेरे हाथ में तो नहीं है, आप मुझे चन्द दिनों के लिए प्रधानमंत्री बनायें, मैं आया-गया, और मुझ में हज़ार कमजोरियां है । असल में हिन्दुस्तान की ताकत है, तो हिन्दुस्तान की जनता में है आप लोगों में हैं और आप ऐसे जो करोड़ों आदमी हिन्दुस्तान में हैं । आप को इसको समझना है, और समझना है खास-तौर से आज के दिन कि आप का, सभों का हमारा क्या कर्तव्य है, किस तरह से हम यह जो एक बेशकीमत चीज़ हमारे हाथ में है, हिन्दुस्तान की आजादी, जिसके जरिये से लेकर हम सारे हिन्दुस्तान के चालीस करोड़ आदमियों को उठायेंगे, कहीं हमारे हाथ से फिसल न जायें, कहीं निकल न जाये अपनी कमजोरी से, यह कोई चन्द अफसरों की, मंत्रियों की, प्रधानमंत्रियों की बातें नहीं है जो मैं आपसे कह रहा हूँ, यह हिन्दुस्तान के करोड़ों आदमियों की बात है, एक एक गांव की, इसलिए मैंने आपसे कहा है हम पंचायती राज चाहते हैं वहां, कि एक एक पंचायत में वहां के लोग पंच सरपंच तगड़े हों, आजाद हों और अपने गांव की और मुल्क की हिफ़ाजत करें । इस तरह से सारे मुल्क में लोग करें । यह बात मैं चाहता हूँ आपको याद दिलाना, क्योंकि यह कर्तव्य आप का है, मुल्क का है । हमने कुछ दिन खिदमत की, कभी गलत कभी सही, हां एक सफ दिल से कोशिश की, लेकिन जो काम हमने उठाया, वो लम्बे से लम्बा आदमी नहीं उठा सकता है अपने आप बगैर मदद के । हमारी पंचवर्षीय योजना को आप देखिए, एक तस्वीर है, एक किताब नहीं है, एक कौम के बढ़ने की तस्वीर है, लेकिन मेहनत से, परेशानी से, परिश्रम से, तब बढ़ेगी और बढ़ेगी वो जरूर, लेकिन आप लोगों की कोशिश से और समझने से । ऐसे मौके पर फिर जब लोग उसको भड़कायें और और

बातों में पड़े और झगड़े उठायें तो फिर कैसे उनको हम गलत और गुनाहगार न समझें। इस बात पर आप गौर करें और आखिर में फिर मैं दोहराऊंगा कि हरेक हिन्दुस्तानी का पहला कर्तव्य क्या है? पहला कर्तव्य उसका है कि हिन्दुस्तान की एकता को, कायम रखना और मजबूत रखना। यह आज का खरसतौर से सबक है और मुबारक हो आपको हिन्दुस्तान की आजादी मुबारक हो आपको यह दिन जब कि 13 बरस हुए यहां यह झण्डा उड़ा था, और ऐसे दिन एक नहीं सैकड़ों और जहारों आपको मुबारक हों।

जयहिन्द।